PART
23

" बोध सागर "

॥ कर्म बोध ॥

कहता कर्म की अब मैं कहानी। जिसके फंदे में अटके प्राणी॥
चारो खानि पे कर्म सवार। महिमा कर्म की अपरम्पार॥
कर्म से धरती पवन आकाश। कर्म से सूर्य चन्द्र प्रकाश॥
कर्म से ब्रह्मा विष्णु महेश। कर्म से उपजे गौरि गणेश॥
सात वार पन्द्रह तिथि साजे। नव ग्रहों पे कर्म बिराजे॥
कर्म से राम कृष्ण अवतार। कर्म से हुआ रावण संहार॥
हितैषी बन वसुदेव घर आया। कर्म यशोदा ने गोद खिलाया॥
कर्म से ही प्रभु गाय चराए। कर्म से ही गोपीयां नचाए॥
कौशल्या तप कर्म जो पाया। राम सा पुत्र तभी तो आया॥
कर्म ने दशरथ किए उदास। कर्म ने राम को दिया बनवास॥
कर्म जाप जब धनुष चढ़ाया। कर्म ने सर सीता का झुकाया
कर्म ही हरा सिया आय। सुख दुख सभी कर्म भुगताय॥
कर्म लेख से कोई ना बचता। राम लखन ने कर्मफल भुगता॥
कर्म के बन्धन में सब बंधते। कर्म के वश ही दुख-सुख सहते।
रुद्र-राम लड़े कर्म लड़ाई। कर्म ने हनुमत भेंट कराई॥
कर्म रेखा नहीं मिटती भाई। जीव को बन्धन में ले फंसाई

Signature

कर्म ने ही रावण को मिटाया। लंकापति विभीषण को बनाया ॥
कर्म लेख करे सबपे काम। चाहे रावण हो या राम ॥
कर्म लेख सबपे ये चलता। नही कोई भी इससे बचता ॥
कर्म लेख सिन्धु बन्ध हीन। समझे विरला कोई प्रवीन ॥
दोहा- { कर्म लेख सागर बन्ध्यौ, सौ योजन विस्तार।
बिना अक्षर (शब्द) कोई ना छूटे.. अक्षर करता पार ॥ }

सागर भव और सागर धार। कैसे उतरें उससे पार ॥
वहां पे बावन अक्षर लेखा। कर्म रेखा को सबपे देखा ॥
कर्म डोर से बंधा हर कोई। हर खानि पे प्रबल ये होई ॥
वेद कर्म की गाते माया। कर्म को ही निष्कर्म बताया ॥
सद्गुरु मिलें तो भेद बतावें। कर्म अकर्म का मध्य दिखावें ॥
कर्म अकर्म के मध्य जो होता। वोही तो निष्कर्म है होता ॥
अक्षर सागर निर्भर वाणी। अक्षर कर्म सभी ने जानी ॥
गोरक्ष भरथरि गोपीचन्द। कर्म फांस का झेले फंद ॥
सौ और सात चौदह इक्कीसा। ब्रह्मा ~~के~~ के चौरासी भैसा ॥
कर्म की फाँस कहाँ तक जाए। व्यास जी सब वेदों में बताए

Signature

दश और द्वादश कर्म बखाने | जिसने जाने, वो पहचाने ||

भूल से कर्म-अकर्म जो करता | भोगना फल सबको ही पड़ता ||

शब्द बाण ले इसकी ओट | होने देता कोई ना चोट ||

~~अक्षय~~ शब्द के भेद को जो कोई जाने | कर्मी होय निष्कर्म बखाने ||

दोहा - कर्मडोर चारों युगों सुनो सन्त सब दास |
बन्धन से वो मुक्त हो शब्द पे जिसे विश्वास ||

सतयुग तप कीन्हे रघु राजा | कर्म से देखा नन्द दरवाजा ||

एक नारि संग राम दुख पाए | सोलह सहस्त्र गोपी बिरमाए ||

कर्म के कारण धरा पे आए | कुन्ज कुन्ज गोपिन को नचाए ||

यहाँ-वहाँ जा माखन चुराए | कर्म ने क्या क्या खेल कराए ||

कंश का लेखा आया जबही | कृष्ण को मारु विचारा तबही ||

कर्म पूतना भेष बनाय | दियो कृष्ण को दूध पिलाय ||

कर्म के कारण वहीं सिधारा | पिए कृष्ण भी विष की धारा ||

मारके उसको किया गति चार | कर्म ~~ब~~ फाँस अटका संसार ||

कर्म इन्द्र बरस्यौ दिन सात | कर्म कृष्ण लिए गिरि हाथ ||

कर्म को मार विध्वंस जो कीन्हा | ~~कारण कर्म कृष्ण मार दीन्हा~~ ||
कर्म फांस के सब Signature आधीना ||

कुब्जा कद्रू कर्म जो कीन्हा। कारण कर्म, कृष्णगति दीन्हा ॥
कर्मपाताल कालेश्वर नाथ। सांवर अंग भयो जब साथ ॥
यज्ञ अश्वमेध किये बलि राजा। कर्म से जाय पाताल विराजा ॥
कर्म ही वामन रूप ले आया। बलि राजा पै दान दिलाया ॥
कर्म तीन पग भूमि लीन्हा। तीन पगों में तीनों पुर लीन्हा ॥
आधा पाँव कर्म अधिकारा। नृपति को पाताल में डारा ॥
जहाँ तक जीव जन्तु हैं जन्मते। वहां तक कर्म डोर सब बंधते ॥
कर्म फांस से कोई ना छूटे। कर्म फाँस सबका घर लूटे ॥

दोहा –
कर्म फाँस छूटे नहीं कितना ही करो उपाय।
सद्गुरु मिलें तो पार हो, नहीं तो परलय जाय ॥

कर्म जो प्राणी जग में करता। कर्मानुसार ही भव में पड़ता ॥
एक भी नहीं यज्ञ व्रत ठाना। एक ना पाप-पुण्य पहचाना ॥
एक कर्म कुल लीन्हे उठाई। कर्म अकर्म ना समझे भाई ॥
चोला पहले तिलक लगावे। पहनके माला साधु कहावे ॥
वैष्णव होय करे षट कर्म। वेद विचार सदा करे धर्म ॥
कथा पुराण सुने चित लाई। कर्म करें सब सोच के भाई ॥

Signature

विष्णु सुमरि तप बहुते विधि कियो। तो भी नहीं निष्कर्म कोई भयो ॥
कर्म की डोर बँधा संसार। क्यों छूटै, उतरै भव पार ॥
एक अभंग एकादशी करई। तन छूटे बैकुण्ठहि तरई ॥
यह बैकुण्ठ न स्थिर होई। अन्त कर्म गति परलय सोई ॥
करै कर्म तो बैकुण्ठ जाई। कर्म घटै तो फिर भव आई ॥
योगी योग कर्म को साधै। क्रिया कर्म हवन आराधै ॥
योगी कर्म, वायु की क्रिया। भुगते कर्म पुनः देह धरिया ॥
सन्यासी जो बन बन फिरता। होय निष्कर्म कर्म फिर करता
जीते जी देह को कष्ट देता। जटा बढ़ाय बुराई परहेता ॥
कोई नग्न कोई वस्त्र कद्योटा। भरमत फिरै लिये कर सोटा ॥
राजद्वार पावै अवतार। भुगते कर्म अकर्म व्यवहार ॥
पंडित जिन सब कर्म बखानें। कर्म फांस से ना बचना जानें ॥
धर्म कर्म की युक्ति बतावें। दान पुण्य की विधि सुनावें ॥
वस्त्र दान ले जन्म गंवावे। पीठ पे अपनी भार लदावे ॥
एक प्राणी जो व्रत को धारै। श्वान सियार सूकर देह धारै ॥
सूकर श्वान बन कर्म जो भुगता। बिन निष्कर्म लेकिन नहीं छूटता ॥

Signature

दोहा - बहुत बन्धनो से बांधा, एक विचारा प्राणी।
जीव बिचारा क्या करे, छूटे ना कर्म कहानी॥

शब्द भेद निःशब्द बताओ। कर निष्कर्म हंस मुक्ताओ॥
निरालम्ब अवलम्ब ना जानें। शब्द निरन्तर आप बखानें॥
पाप पुण्य की छोड़े आश। कर्म धर्म से रहे उदास॥
रहे उदास नाम लौ लगाय। भरम भूत को देय बहाय॥
सुख सम्पत्ति ना विपत्ति विचारे। होय निष्कर्म कर्म को मारे॥
शब्द ध्यान जो भूलके काया। अभिअन्तर की मेटे माया॥
शील स्वभाव शरीर बसावे। हृदय अन्दर ध्यान लगावे॥
ब्रह्म की अग्नि मन में जगाए। शब्द को अपने घट में बसाए॥
तत्व समझे निस्तत्व विचार। काम क्रोध को दे जो मार॥
यह योग जो योगी करता। कर्मयोग में कभी ना फंसता॥
धन यौवन की करे ना आश। कामिनी, कनक के जाए ना पास
मन चाहे जितना भटकाए। हृदय शब्द से भटके ना पाए॥
भेद नाम का जो कोई पाए। अपने आप समर्थ हो जाए॥
जो कोई आक अग्नि जलाए। बनके शीतल जल वो बुझाए॥

Signature

गुरु का मत जो भी अपनाए। शब्द खजाने में रम जाए॥
शूर ही ~~क~~ शब्द नाम से जूझै। भोंदू नहीं शब्द को बूझै॥
दुखिया दुख में रैन दिन रोवै। भोगी भोग करै और सोवै॥
दुख-सुख भोग, शोक सम जाने। भला बुरा मन नहीं कुछ मोबे
भले बुरे का करै जो त्याग। निश्चय पावै वह बैराग॥
सींगी अक्षय रैन दिन बाजै। सिद्ध साधू वहाँ.. आसन साजै

॥ दोहा ॥

आसन साधै आपमें, आपा अपना खोय।
कहै कबीर वह योगी.. मुक्त कर्म से होय॥

Signature